

● सफलता के लिए...

फेलियर भी है जरूरी



हम सभी जीवन में तरक्की करना चाहते हैं, और इसके लिए हम कड़ी मेहनत भी करते हैं, पर फेलियर हमें बुरी तरह से डराता है। इस डर के चलते हम अपने बच्चों को रस का घोड़ा बना देते हैं। हम चाहते हैं कि वे ज्यादा-से-ज्यादा नंबर लाएं और सबसे आगे रहें। यदि वे हमारी अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरते, तो हम भी अंदर से कहीं न कहीं टूटने लगते हैं। फेलियर आपके बच्चे के करियर के लिए बुरा कतई नहीं है। सीखने की सबसे पहली और बेहतर प्रक्रिया फेलियर ही है।

बच्चे एक नाजुक पौधे की तरह हैं, इन्हें बहुत देखरेख की जरूरत होती है। इन दिनों बच्चों पर बेहतर करने का दबाव बहुत ही ज्यादा है। बच्चों की रुचि के हिसाब से करियर नहीं, बल्कि करियर के हिसाब से रुचि डेवलप करने की कोशिश की जा रही है। ऐसे में अक्सर देखने में आता है कि बच्चा अपनी रुचि से भटक जाता है।

माता-पिता को यह समझना चाहिए कि हर बच्चे की रुचि और क्षमता अलग-अलग होती है, पर आजकल माता-पिता अपने बच्चे को सबसे आगे दिखाने के प्रयास में जुटे रहते हैं। वे चाहते हैं कि बच्चा अच्छा गाए, अच्छा नाचे, अच्छा पढ़े और वह हर चीज में मास्टर हो। कहीं उसे फेलियर का सामना न करना पड़े। लोगों ने अपने बच्चों को आई फोन की तरह नुमाइश की चीज बना लिया है। वे हर किसी के सामने अपने बच्चे के गुणों को गाना चाहते हैं। इसी चक्कर में वे उसे उन क्षेत्रों में जबरन धकेल देते हैं, जो उनकी रुचि और क्षमता से अलग होते हैं, परिणाम फेलियर के रूप में सामने आता है। कई बार बच्चे भी परिवार और समाज के दबाव में अपनी रुचियों से अलग हटकर अपना करियर चुनते हैं। इसीलिए मेरा मानना है कि कई बार फेलियर बहुत अच्छा होता है, वह बच्चे और परिवार वालों को एक बार फिर सोचने का मौका देता है।

जब तक आप अपनी कमियां नहीं जानते तब तक आपका समुचित विकास संभव नहीं है। मान लीजिए बच्चे की मैथ्स बहुत अच्छी है और इंग्लिश कमजोर तो फेलियर उसे सिखाता है कि वह इंग्लिश के लिए एक घंटा और मेहनत करे। जो बच्चा हमेशा आगे होता है, कई बार उसमें चीजों की समझ उतनी अच्छी तरह से डेवलप नहीं हो पाती। कहीं न कहीं उसे लगने लगता है कि वह जो भी करता है वही सही है। ऐसे में अभिभावकों को चाहिए कि अपने बच्चे को हमेशा इस बात का एहसास कराते रहें कि दुनिया बहुत बड़ी है, और यहां अलग-अलग क्षमता के लोग रहते हैं।

SHREE BALAJI HOSPITAL

(A Unit of Shree Balaji Super Speciality Healthcare Pvt. Ltd.)

Balaji Vihar, Kangra, H.P.

Ph: (01892) 260797, 94594-40797



FACULTY

- ◆ Medical Specialist
- ◆ Obst. & Gynae. Surgeon
- ◆ Radiologist
- ◆ Lapro. & Gen. Surgeon
- ◆ Orthopedic Surgeon
- ◆ Child Specialist
- ◆ Anesthetist
- ◆ Eye Surgeon
- ◆ Nephrologist (Visiting)
- ◆ Urologist
- ◆ Cardiologist
- ◆ Gastroenterology
- ◆ Neurosurgeon
- ◆ Pathologist
- ◆ Dental Surgeon
- ◆ Physiotherapist
- ◆ Dietician
- ◆ ENT

FACILITIES

- ◆ Introducing 1.5 Tesla MRI Scan
- ◆ Haemodialysis Unit ◆ Angiography, Stenting, Pacemaker ◆ HOLTHER, ECHO, TMT ◆ Infertility Unit ◆ Cardiac care Unit (CCU) ◆ Neonatal, Pediatric & Adult ICU ◆ Lithotripsy Unit & C-Arm
- ◆ Endoscopy, Colonoscopy, ERCP, Foreign Body Removal ◆ X-Ray/USG/Doppler, CT Scan, MRI
- ◆ OPG for Dental X-Ray ◆ USG/CT guided FNAC & Pigtail Drainage ◆ Laparoscopic, General & Gynae. Surgeries Neurosurgery, Orthopedic Surgeries (Knee, Hip, Shoulder Replacement) Eye Surgeries, (Phaco Machine) Dental Services, 24 Hr. Laboratory Services

Cashless facility available for Govt. Employees, ECHS, TPA, BPL

24 Hrs Ambulance Service/ Canteen & Chemist shop available



Shree Balaji Institute for Competition (BIC)

Balaji Hospital Campus, Balaji Vihar, Kangra (H.P.) - 176001

Why Chandigarh or Kota?

BIC, Kangra is providing guidance and coaching near your vicinity to transform your dreams into reality.

ADMISSION ANNOUNCEMENT

**NEET-UG/AIIMS
JEE (MAIN & ADVANCED)**

For XI, XII Classes and Droppers

**FOUNDATION COURSES
FOR
NEET/AIIMS/JEE**

For IX and X Classes

**NTSE
(National Level Science
Talent Search Examination)**

For VI, VII & VIII Classes

NDA For XI and XII Classes



Prof. S.K. Sharma
Managing Director

Registration open
classes from
2nd April, 2020

**Banking
Examinations**

**SSC
Examination**

**TET/CTET
(For Arts, Medical & Non-Medical)**

Hostel Facility
available

BIC-SAT 2020 (On 22nd March 2020)
(Scholarship Admission Test)
For VI, VII & VIII Classes



Dr. Rajesh Sharma
Chairman

Contact : 01892-260797, 94592-00015

● लॉकडाउन में...

बोर हो रहे हैं बच्चे तो...



अब लॉकडाउन को बढ़ाकर 3 मई तक कर दिया गया है। पैरेंट्स को समझ में नहीं आ रहा है कि बच्चों को कैसे संभालें। किसी तरह तो पहले फेज में उन्हें संभाल रखा था। बच्चों को किताबें पढ़ने के लिए कहना और घर के कामों में मदद करना सिखाना सबसे अच्छा टाइमपास था, पर वे बच्चे हैं, एक लिमिट के बार जाहिर तौर पर बोर हो जाएंगे। वे अगर बोर हो रहे हैं तो उन्हें बोर होने दें। यह उनके विकास के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण साबित होगा। बोरियत और रचनात्मकता का गहरा नाता है। जब आप अपने बच्चे को बोर होने देते हैं, तब वह अपने मनोरंजन का तरीका खुद ही ढूंढ लेता है। उनके रचनात्मक दिमाग को जरूरी पुश मिलता है। वे अपने आप को खुश रखनेवाली गतिविधियों में व्यस्त कर लेते हैं। और खुद को मोटिवेट करते हैं। देखा जाए तो रचनात्मकता कोई आसान और सीधी-सरल चीज नहीं है। इसका कोई बना-बनाया फॉर्मूला नहीं है कि ऐसा होगा, तभी वैसा होगा। बोरियत आपके बच्चे के अवचेतन मस्तिष्क में एक समस्या का निर्माण करती है।

● शिशु आहार...

चार महीने के बाद दूध की मात्रा कम कर देनी चाहिए। इससे आपको आसानी रहेगी। बच्चा पूरे दिन आपका दूध मिस नहीं करेगा और आप बेफिक्र होकर ऑफिस में काम कर सकती हैं। दूध कम करने के लिए अन्न चखाने का अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि उसे आप सॉलिड फूड खिलाना शुरू कर दें। उसे शिशु आहार दें, यानी पतला और सुपाच्य भोजन। यदि बच्चा चार महीने का हो गया है, तो उसे दाल का पानी, चावल का पानी, रागी, गेहूं या बेसन का हलवा खिलाने की आदत डालें। तैरलैक्स भी दे सकते हैं। फलों में सेब, चीकू, केला और पपीता भैश करके खिलाएं। वेजेटेबल सूप भी पिला सकते हैं।

